

पवमान पवमान जगद प्राण

संकरुषण भव भयारण्य दहन । प ।

श्रवणवे मोदलाद नवविध भकुतिय

तवकदिंदलि कोडु कविजनप्रिया । अप ।

हेम कच्चूट उपवीत धरित मारुत

कामादिवर्गरहिता व्योमादि सकल व्यावृता निर्भीता

रामचंद्रन निजदूत याम यामके निनारधिपुदके

कामिपे एनगिदु नेमिसि प्रतिदिन ई मनसिगे सुखस्तोमव

तोरुत पामरमतियनु नीमाणिपुदो ॥ १ ॥

वज्र शरीर गंभीर मुकुटधर दुर्जनवनकुठार

निर्जरमणि दया पारावारा उदार सज्जनरघपरिहार

अर्जुनगोलिदंदु ध्वजवानिसि निंदु मूर्जगवरिवंते

गर्जने माडिदि हेज्जे हेज्जेगे निन अब्ज पाददोळि मूर्जगदलि

भववर्जित नेनिसो ॥ २ ॥

प्राण अपान व्यान उदान समान आनंद भारति रमण

नीने शर्वादिगीर्वाणाद्यरिगे जानधनपालिप वरेण्य

नानु निरुतदलि ऐनेनेसगुवे मानसादि कर्म

निनगोप्पिसिदेनो प्राणनाथ सिरिविजयविठलन

काणिसिकोडुवुदु भानुप्रकाश ॥ ३ ॥